सतिगुर रहमु कियो, तड़ीं अखियूं खुली आयूं,
दरिसन पंहिंजे दोस जो सुतह सिधि थियो,
भारी भवसागर खों, लंघे पारि पियो,
बिना बोध बियो, सामी सुझे कीनकी.

सतगुरु की कृपा का वर्णन करते हुए सामी साहब कहते हैं कि मेरे सतगुरू ने मुझ पर दया/कृपा की तब मेरी आँखें खुल गयी अर्थात् मेरे मन का अज्ञान रूपी अंधकार नष्ट हो गया और में सजग हो गया। सतगुरु की कृपा से ही मुझे अपने आप प्रीतम परमेश्वर के दर्शन हो गये। फलस्वरूप इस भंयकर भवसागर को पार कर सकना मेरे लिए आसान हो सका।

मनुष्य इस दृश्य जगत को अपने चर्म-चक्षुओं से देख सकता हैं। किन्तु इंद्रियातीत परब्रह्म/परमेश्वर के अनुभव करने-कराने वाला कोई विरला ही सत्पुरुष/महापुरुष होता है। सतगुरु आत्मस्वरूप का साक्षात् अनुभव करने वाले होते हैं। विश्व के अंतर्बाह्य व्याप्त परमेश्वर से एकरूपता स्थापित करने वाले सतगुरु ही होते हैं। भगवान का रूप होने वाले सतगुरु यदि अपने शिष्य पर कृपा करते हैं, तो वह शिष्य पूर्ण पद पर आसीन हो सकता है। माया का बंधन तत्त्वज्ञान द्वारा ही नष्ट हो सकता है, अन्य किसी कर्म आदि द्वारा नहीं। वेदांत के महावाक्यों से उत्पन्न जीव-ब्रह्म-एकता का अनुभव ही 'ज्ञान' है। यह ज्ञान ईश्वर-प्रसाद से सतगुरु की कृपा हो जाने पर अधिकारी शिष्य में महावाक्यों द्वारा 'शक्तिपात' से उत्पन्न होता है। अर्थात् ईश्वर की वह शक्ति शिष्य में भी होती है और उसे जाग्रत करने का कार्य सतगुरु द्वारा होता है। शक्ति के जाग्रत होने से प्राणवायु ऊर्ध्वगामी होता है और चित्त एवं प्राण दोनों का ही पूर्ण लय हो जाता है। इस कारण कुंडलिनी योग को 'महायोग' कहा जाता है। यह भी चित्तवृत्ति-निरोध रूप ही होता है और यह सतगुरु की कृपा से शीघ्र प्राप्त होता है। अत: शक्ति जाग्रत करने के लिए सतगुरु के पास जाना आवश्यक है।

सामी साहब भी यही तथ्य समझाने का प्रयत्न करते हैं कि सतगुरु की कृपा से ही मन की आँखें खुलती हैं और तभी हमारा चित्त/अंत:करण विकार-विहीन होकर निर्मल/पवित्र बन जाता है। फलस्वरूप आगे चलकर हम भवसागर पार कर सकने के अधिकारी बन सकते हैं।

सतगुरु मिला जु जानिये, ज्ञान उजाला होय।
भ्रम का भाँडा तोड़ि करि, रहै निराला होय।।

■